उपसंहार

उपसंहार

'' ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का अनुशीलन '' करने के पश्चात निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं वे यहाँ सार रूप में प्रस्तुत हैं -- ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विश्लेषण के उपरांत मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि उनका व्यक्तित्व जिज्ञासु, कलाप्रेमी, स्वाभिमानी, साहसी, यथार्थ के हिमायती और समाज सुधार की भावना से ओत-प्रोत हैं। स्वयं दलित होने के कारण उन्होंने दलित जीवन भोगा है, परिणाम स्वरूप उनकी कहानियाँ भी दलित जीवन के अनुभव से जुड़ी घटनाओं का चित्रण करती हैं। उनकी सामाजिक सोच तथा गहरी सूझ-बूझ दलित साहित्य को सशक्त और विकसित करती हुई परिलक्षित होती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित जीवन की अनेक कठिनाईयाँ तथा संघर्ष से सामना करते आए हैं। आज भी उन्हें ऐसे संघर्षो का सामना करना पड़ रहा है। उनका व्यक्तित्व संघर्षशील, कर्मशील, महान विचारक, बहुमुखी प्रतिभावान, यातना एवं कष्टों से ही बना हुआ परिलक्षित होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि अपने जीवन में बहुत सारे पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं। ' सत्य' और 'प्रामाणिकता ' के दो पग लेकर चलनेवाले ओमप्रकाश जी का जीवन जाति के बवंड़र में फँसा हुआ नजर आता है। फिर भी तूफानों का सामना एवं संघर्ष कर अपने जीवन की कश्ती को आर्दशमय दिशा देने वाला दृष्टिगोचर होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के स्वरूप विवेचन के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ ऐसे यथार्थ को हमारे सामने लाती हैं जो हमें सोचने के लिए विवश करता है कि हम अपनी सामाजिकता में वर्ण व्यवस्था के नासूर को क्यों नहीं देख पा रहे हैं ? ओमप्रकाश जी अपनी दलित पहचान को बनाएँ रखे परंतु हम उनकी सर्जना में आज की कहानी के एक ऐसे सर्जक का साक्षात्कार

पाते हैं जिसमें रचनात्मकता विवेक के साथ यथार्थ के प्रति एक संजिदा रूख है और जो इन्सानियत के बड़े आशयों से जुड़ा रचनाकार है। उनकी कहानियों का गहराई के साथ अध्ययन करने के उपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी कहानियाँ भले ही दलित जीवन से संबंधित हो लेकिन स्वरूपगत रूप से निश्चित ही अलग प्रस्तुत हुई परिलक्षित होती हैं।

उनकी कहानियाँ भावप्रवन रूप को अपानकर उच्च-कोटि की भावनिक परिसीमा को प्रस्तुत करने की कोशिश करती हैं। सघर्षयुक्त कहानियों में परिस्थितिनुसार स्वाभाविक संघर्ष के चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित हुए हैं। दमन करनेवाली कथाओं में उच्च वर्ण द्वारा दलितों का दमन दृष्टिगोचर हुआ है। यौन संबंध में जाति-पाँति बाधा नहीं होती इसका चित्रण भी हुआ है। जातिभय के कारण आदमी गलत कदम उठाता है और अंतत: उसे पश्चाताप होता है इसका विवेचन जातिभय उत्पन्न करनेवाली कहानियों में किया है। इसके साथ ही कुछ शोषण करनेवाली कहानियाँ भी हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाती हैं, जिसमें कमजोर दलित समाज की दयनीयता दृष्टिगोचर हुई है। सारांशत: ओमप्रकाश जी की कहानियों के स्वरूपगत विवेचन से भारतीय समाज की श्रेष्ठता और अनेक विड़ंबनाओं के साथ-साथ कुछ विसंगतियाँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के चरित्रगत अध्ययन के उपरांत जो निष्कर्ष सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं --

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में अधिकांश पात्र दलित हैं, जो शोषित, विवश, संदेह युक्त तथा अन्याय अत्याचार से पीड़ित जीवन जीते हुए परिलक्षित होते हैं। वाल्मीकि जी अपनी कहानियों में दलितों की विवशता और पीड़ा तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि अपनी दलित चेतना के फलस्वरूप सांमती पंरपरा, अन्याय और शोषण के प्रति विद्रोही चरित्र भी प्रस्तुत किए हैं। उनकी कहानियों के चरित्र दलित संघर्ष, विद्रोह भाव, व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा, असहाय स्थिति तथा अपनी विवशता में जूझने का संकल्प करते हुए परिलक्षित होते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के चरित्रों का स्वभावगत अध्ययन करने के पश्चात स्पष्ट होता है कि उन्होंने परिस्थिति से दबे हुए चरित्र भी चित्रित किए हैं। इसके साथ ही कुछ आदर्श चरित्र भी है जिनके विचार से आदर्शता पाठकों के सामने उपस्थित हो जाती है। उन्होंने कहानी में रोचकता बढ़ाने हेतु कुछ खल चरित्रों का निर्माण भी किया है। इसके साथ असहाय, विद्रोही एवं तनावग्रस्त, चरित्रों को भी पाठकों के सम्मुख उपस्थित किया है।

सारांशत: कहा जा सकता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के चरित्र में निर्मम साक्षात्कार है, उनकी पात्रों की चयन दृष्टि के मूल में आम दलित आदमी की पक्षधरता और प्रतिबद्धता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित जीवन की समस्याओं के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात जो निष्कर्ष सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ जातिवादी समाज की गंदी मानसिकता को समग्र रूप में प्रस्तुत करने की सफल कोशिश करती हैं। उनकी कहानियाँ दलित जातियों के कड़वे सच और उनके जीवन की व्यापकता को उजागर करके दलित जीवन की यथार्थता को रूपायित कर प्रगतशिल विचारों की मांग करती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित जीवन की यथार्थ स्थिति, दशा, और बहुत सारे प्रश्न लेकर प्रस्तुत हुई हैं। इसमें दलितों के साथ हुए अत्याचार, अनाचार, लूट, शोषण, यातना और प्रताड़ना आदि समस्याओं के मूल कारण दिखाई देते हैं।

विवेच्य कहानियों में जाति समस्या के साथ-साथ परंपरागत व्यवसाय की समस्या प्रस्तुत हुई है। कुछ समस्याएँ जाति की हीनता से दबे रहने के कारण उपजी हैं। बलिप्रथा की समस्या तो आदमी को पागल बना देती है। इसका उत्कृष्ट चित्रण 'भय' कहानी में प्रस्तुत हुआ है। अनपढ़ता के कारण लोगों की लूट प्रस्तुत हुई है। जिस जाति के कारण व्यक्ति का प्रमोशन हुआ है, वही जाति रूकावट बन जाती है, यह हमारे समाज व्यवस्था की विड़ंबनात्मक रचना का वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुतीकरण हुआ है। दलित मजदूर

के हाथों दूध न पीकर उनकी भावनाओं के साथ हुए खिलवाड़ को भी वाल्मीकि जी ने अपनी रचनाओं द्वारा प्रस्तुत किया है। मेडिकल कॉलेज में दलित छात्रों पर होनेवाले अत्याचार उनका शोषण, दलितों में भी उच्च-नीच की समस्या ऐसी असहाय घटनाओं को भी ओमप्रकाश वाल्मीकि ने बेहिचक प्रस्तुत किया है।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद भी भारत में दलितों की समस्या व्यापक रूप में फैली है, यही वाल्मीकि जी की कहानियों द्वारा स्पष्ट होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि खुद दलित होने से वे अनुभवदग्ध जीवन से उबलकर निकले हैं, इसलिए उन्होंने अपनी धडकनों को पात्रों के माध्यम से अपनी कहानियों में अंकित करने की कोशिश की है।

कहानी कला की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का मूल्यांकन करने के पश्चात जो निष्कर्ष सामने आए हैं वे इस तरह से हैं कि रचना में अनुभूति तथा अनुभव तत्व प्रधान रहे हैं। कहानी कला की दृष्टि से उनकी कहानियाँ काफी प्रभावपूर्ण और प्रयोजनात्मक दिखाई देती हैं। कहानियों के ' शीर्षक' आकर्षक, प्रभावी एवं अर्थपूर्ण हैं। कथानक सोद्देश्य, संक्षिप्त, लंबे, छोटे और स्वाभाविक रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। अनेक चरित्र-चित्रण में पात्रों की योजना अत्यंत स्वाभाविक बन गयी है। उनके कुछ पात्र प्रतिकात्मक रूप से प्रकट हुए हैं तथा सामाजिक रूप से विवश और दयनीय भी लगते हैं। कथोपकथन के कारण वास्तविकता और भी अधिक सजीव लगती है। उनके संवाद अर्थपूर्ण, सुगठित और स्वाभाविक परिलक्षित होते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने संवाद की मदद से मानव जीवन की विवशता को भावात्मक एवं विचारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। देशकाल वातावरण के कारण कहानियाँ और अधिक मजबूत बन गयी हैं। वाल्मीकि जी ने देशकाल वातावरण में दलितों के प्रति अत्याचारित और आतंकित वातावरण को भी प्रस्तुत किया है जिससे दलितों के यातनामय, पीड़ादायक और करूणा भरे वातावरण से पाठक भी तिलमिला हो उठता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की भाषा अत्यंत सीधी, सरल और स्वाभाविक प्रतीत होती है। शैली में वर्णनात्मक, संवादात्मक, कथात्मक, आवेशमयी, मनोविश्लात्मक

आदि का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। विविध शैलियों के कारण उनकी कहानियाँ सौन्दर्यमय हो गयी हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का उद्देश्य दलित जीवन की समस्याओं के साथ उनकी यातना, पीड़ा, दु:ख, दर्द, परिस्थिति आदि को उजागर करना और समाधान पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहना ही है। अंतत: हम यह कह सकते हैं कि उद्देश्य की दृष्टि से ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की कहानियाँ अत्यंत श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण परिलक्षित होती हैं और समग्र रूप में अर्थात कहानी कला की दृष्टि से उनकी कहानियाँ अपने-आप में वैशिष्टयपूर्ण बन गई हैं।

उपलब्धियाँ -

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चित्रित दलित जीवन का चित्रण लेखक के अनुभव जगत का लेखा-जोखा है, जो यथार्थ परिस्थिति का वस्तुनिष्ठ रूप प्रस्तुत करता है।

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित जीवन अन्य जीवन की अपेक्षा कितना पीड़ित है इसका समग्र चित्रण उपलब्ध है।

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों की घटना यथार्थता से संबंध रखती है, वे खुद दलित जीवन से होने के कारण उनकी रचना प्रामाणिक एवं असंदिग्ध लगती है।

4 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ याने सबसे बड़े जनतंत्रवाले भारत वर्ष की सामाजिकता एवं वर्ण व्यवस्था पर किया हुआ करारा व्यंग है जो पाठकों को सचेत कर देता है।

5 ओमप्रकाश वाल्मीकि की अधिकांश कहानियाँ विवश, असहाय तथा दयनीय घटना को उजागर करती है, जिससे पाठक सोचने के लिए विवश होता है।

6 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चरित्र अपने लक्ष्य से विचलित न होकर आत्मिक मनोबल तथा दृढ़ साहस के बलपर जीवन में आई कठिन से कठिन समस्याओं का सामना करते हुए परिलक्षित हुए हैं।

7 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ पाठकों को भारत के वर्णाश्रमी समाज के प्रति विचार करने को प्रवृत्त करती हैं। यह उनकी कहानियों की सबसे बड़ी उपलब्धि महसूस होती है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित चेतना ।

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में चरित्रों का मनोविश्लेषण ।

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में जातिवादी मानसिकता ।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। यहाँ मेरे शोध-विषय की भी सीमा है। आशा है भविष्य में उपर्युक्त विषय पर शोधार्थी स्वतंत्र रूप में शोध कार्य संपन्न कर सकेंगे।